साहित्य अकादेमी
रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग
नई दिल्ली 110 001

प्रेस विज्ञप्ति
साहित्योत्सव का अंतिम दिन

भारत की अलिखित भाषाओं, अनुवाद पुनर्कथन के रूप में एवं लोक साहित्य : कथन एवं पुनर्कथन विषयक संगोष्ठियाँ संपन्न।
इतिहास को वर्तमान से जोड़ता है अनुवाद –सितांशु यशश्चंद्र

नई दिल्ली, 26 फ़रवरी 2017 । साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित छह दिवसीय साहित्योत्सव का समापन आज यहाँ तीन महत्त्वपूर्ण विषयों पर आयोजित संगोष्ठियों के समापन के साथ संपन्न हुआ।

अनुवाद पुनर्कथन के रूप में विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन प्रख्यात गुजराती लेखक सितांशु यशश्चंद्र ने तथा बीज वक्तव्य प्रसिद्ध अंग्रेज़ी विद्वान सुमन्यु सत्पथी ने दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने की। सर्वप्रथम साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि अकादेमी का मुख्य कार्य ही अनुवाद है। अनुवाद के कारण भारतीय साहित्य में विविधता आई है और वह विभिन्न भारतीय भाषाओं में आम आदमी तक पहुँचा है।

सितांशु यशश्चंद्र ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि कृष्ण कथा और राम कथा का हमारे देश में कई भाषाओं में अनूदित हो रोचक पुनर्कथन हुआ है। यह अनुवाद आज तक हमारी आधुनिक भाषाओं में भी हो रहा है। यह एक बड़ी घटना है। यह इतिहास को वर्तमान से जोड़ने का बड़ा प्रयास है। उन्होंने अनुवाद प्रक्रिया में आने वाले बिखराव फैलाव और छाया अनुवाद आदि की चर्चा करते हुए संस्कृत/प्राकृत/पाली/हिंदी/गुजरात आदि के कई अनुवादों से कई उदाहरण दिए।

प्रतिष्ठित अंग्रेज़ी विद्वान और अनुवादक सुमन्यु सत्पथी ने बीज वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि 'अनुवाद' एक स्त्री की तरह है, अगर वह सुंदर है तो विश्वनीय नहीं और यदि विश्वास के काबिल है तो सुंदर नहीं। उन्होंने कहा कि मेरे मतानुसार अनुवाद को सुंदर और विश्वनीय दोनों होना चाहिए। उन्होंने बताया कि सारला दास महाभारत का कभी तो अनुवाद करती हैं और कभी उसका सृजन, कभी–कभी वे इसे मूल रूप से लिखती हैं। उन्होंने 'एलिस इन वंडरलैंड' का ज़िक्र किया और कहा इसका विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनेक तरीकों से अनुवाद हुआ है। अनुवादक अपने काम में अभिनव परिवर्तनात्मक रहे हैं उन्होंने मूल टेक्स्ट के साथ विमर्श में पर्याप्त स्वतंत्रता भी ली है।

विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कहा कि पुनर्कथन की परंपरा भारतीय वांग्मय में हजारों वर्ष पूर्व से मौजूद रही है। उन्होंने अनुवाद और पुनर्कथन के उदाहरण देते हुए कहा कि रामायण और महाभारत के सबसे अधिक अनुवाद हुए हैं। उन्होंने कहा कि तुलसीदास ने अनुवाद भी किया और पुनर्कथन भी। इस प्रकार रचना का पुनर्सृजन किया है।

अगला सत्र जो भक्ति आंदोलन : अनुवाद पुनर्कथन के रूप में विषय पर केन्द्रित था, जिसकी अध्यक्षता मिनी कृष्णन ने की और चन्द्रकान्त पाटिल, नंदकिशोर पांडेय और जे.एल. रेड्डी ने आलेख पढ़े। चन्द्रकांत पाटिल ने कहा कि जब–जब मुख्यधारा का साहित्य शिथिल और प्राणहीन होता है संत साहित्य लोक साहित्य की ओर लौटकर ही नवजीवन पाता है।

साहित्योत्सव के अंतिम दिन '**भारत की अलिखित भाषाएँ**' विषयक परिसंवाद का आयोजन तीन वैचारिक सत्रों किया गया। प्रथम सत्र, अकादेमी के जनजातीय एवं वाचिक साहित्य केन्द्र, नई दिल्ली की निदेशक प्रो. अन्विता अब्बी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। आरंभ में अकादेमी के विशेष अधिकारी डॉ. देवेन्द्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी द्वारा गैर–मान्यता प्राप्त भाषाओं के लिए किए जा रहे कार्यों के बारे में संक्षेप में बताया।

डॉ. अवधेश कुमार मिश्र ने पूर्वोत्तर भारत की भाषाओं पर बात करते हुए कहा कि यह प्रसननता की बात है पूर्वोत्तर की सभी भाषाएँ किसी–न–किसी लिपि में लिखी जा रही हैं। विभिन्न क्षेत्रों की बोली भाषाएँ प्रायः अपने क्षेत्र की प्रमुख भाषा लिपि को अपनाती हैं। लेकिन पूर्वोत्तर को अधिकांश भाषाओं को रोमन लिपि को विभिन्न संसोधनों के साथ अपनाया हुआ है। इंदिरा गाँधी अंतरराष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के प्रो. अवधेश कुमार सिंह ने कहा कि वाचिक और लिखित में वे वाचिक को ही अधिक महत्त्वपूर्ण मानते हैं। इस सत्र में प्रो. पुरुषोत्तम बिलिमाले और डॉ. शैलेन्द्र मोहन ने क्रमशः तुलु और निहाली भाषाओं के संदर्भ में अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए विस्तार से उनकी विशिष्टताओं के बारे में बताया। प्रो. अन्विता अब्बी ने कहा कि भारत एक भाषा समृद्ध देश है तथा यहाँ की वाचिक साहित्य एवं परंपराओं को लिखित रूप में मानने वाले के साथ–साथ उन्हें उनके वाचिक रूप में भी बचाकर रखने की ज़रूरत है। इस अवसर पर अकादेमी द्वारा प्रकाशित दो पुस्तकों *Unwritten Languages of India*, Ed. Anvita Abbi, *कालाहांडी के वाचिक महाकाव्य*, ले. महेन्द्र कुमार मिश्र, अनु. दिनेश मालवीय का विमोचन अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी द्वारा किया गया। पुस्तकों का विमोचन करते हुए उन्होंने कहा कि एक समय था जब वाचिक ही सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होता था, लेकिन आज जब लिखित महत्त्वपूर्ण हो गया है, इस तरह की पुस्तकों का प्रकाशित होना सुखदायी है। परिसंवाद का दूसरा वैचारिक सत्र प्रो. सुकृता पॉल कुमार की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें प्रो. आनंद महानंद, प्रो. भक्तवत्सला भारती और प्रो. सी. महेश्वरन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. महानंद ने विशिष्ट आदिवासी वार्षिक परंपराओं और आधुनिकता के संदर्भ में अपनी पावर–प्वाइंट प्रस्तुति की। प्रो. भारती और प्रो. महेश्वरन ने क्रमशः नीलगिरि पर्वत शृंखला के मध्य उपस्थित टोडा और अलु कुनवा जनजातियों और उनकी भाषाओं पर केन्द्रित अपने आलेख प्रस्तुत किए।

परिसंवाद का तृतीय सत्र 'अलिखित भाषाओं का वजूद' विषयक परिचर्चा का था, जिसकी अध्यक्षता प्रो. रमाकांत अग्निहोत्री ने की। इस परिचर्चा में श्रीमती आयेशा क़िदवई, श्रीमती कीर्ति जैन, श्रीमती वासम्मली, श्री जोसेफ़ बरा और श्री कार्तिक नारायणन ने सहभागिता की।

लोक साहित्य : कथन एवं पुनर्कथन विषयक त्रिदिवसीय संगोष्ठी के अंतिम दिन सातवाँ सत्र प्रो. भालचंद्र नेमाड़े की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जो 'लोक साहित्य : बहुभाषी परिप्रेक्ष्य' पर केंद्रित था, जिसमें डॉ. अनिल बोरो, डॉ. काशीनाथ वी. बरहठे एवं प्रो. प्रदीप ज्योति महंत ने अपने आलेख पढ़े। डॉ. अनिल बोरो ने कहा, ''लोकसाहित्य पूर्वोत्तर भारत जैसे बहुभाषी समाज में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। परंपराभिमुखी जिस समाज में हम हैं, वह लोकसाहित्य से भरपूर है, चाहे वह गीत हो, कहानियाँ हों अथवा प्रथाएँ।'' डॉ. काशीनाथ वी. बरहठे ने कहा कि

भारतीय संस्कृति की विशिष्टता इसकी बहुभाषिकता और संस्कृति बहुलता में ही है। उनका आलेख 'कोर्कू उप–जनजाति और कोर्कू भाषा' पर केंद्रित था, जिसमें उन्होंने विस्तार से इसके इतिहास और क्षेत्र का वर्णन किया। डॉ. प्रदीप ज्योति महंत ने असम स्थित वैष्णव सत्रों की विशिष्ट परंपराओं पर अपना आलेख पाठ किया।

आठवें सत्र की अध्यक्षता डॉ. प्रदीप ज्योति महंत ने की, जो 'लोक आख्यान' पर केंद्रित था। इस सत्र में श्री रमेंद्र कुमार, डॉ. वरुण चक्रवर्ती और डॉ. सुरजीत सिंह ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री रमेंद्र कुमार ने लोककथाओं और मिथकों के अंतर्सम्बंधों पर अपना आलेख पाठ करते हुए कहा कि कभी–कभी ये एक–दूसरे से इतना अधिक प्रभावित रहते हैं कि इन्हें अलग करना मुश्किल हो जाता है। डॉ. वरुण कुमार चक्रवर्ती ने कहा कि लोककथाएँ सर्वाधिक आकर्षक होती हैं। ये सहजता से हर उम्र के लोगों को मोह लेती हैं। डॉ. सुरजीत सिंह ने कहा कि सांस्कृतिक निर्माण की प्रक्रिया में लोक आख्यान ऐतिहासिक ज्ञान की कुंजी होते है।

'लोसाहित्य एवं संस्कृति' पर केंद्रित नवें सत्र की अध्यक्षता प्रो. एच. एस. शिवप्रकाश ने की, जिसमें डॉ. सीमा शर्मा और सुश्री अपराजिता शुक्ला ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. शर्मा ने लोकप्रिय माध्यमों द्वारा प्रस्तुत किए जा रहे लोकसाहित्य के संदर्भ में अपनी बात रखते हुए कहा कि इस पुनर्प्रस्तुति की प्रक्रिया में बहुत कुछ हाशिए पर छूट जाता है। सुश्री अपराजिता ने उत्तराखंड के 'जगार' पर केंद्रित अपने आलेख का पाठ किया।